thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 16 रोहतक, 21 सितम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

पाप का फल भोगना ही होगा

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

जब से आलस्य एवं प्रमाद के कारण वेद का पठन-पाठन छूटा, अनेक प्रकार के पाखण्ड एवं आडम्बर फैलते चले गए। आज व्यक्ति ईश्वर, उपासना, धर्म, कर्म, यज्ञ, व्रत, तीर्थ, श्राद्ध तथा गुरु एवं गुरुमन्त्र आदि के वास्तविक महत्त्व एवं स्वरूप आदि को पूर्णरूप से विस्मृत कर चुका है। चार धाम के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की कल्पित मान्यताएं स्थापित करके व्यक्ति जीवन को बर्बाद कर रहा है। चारों दिशाओं में चार धामों के नाम पर चार स्थान सुनिश्चित कर दिए गए हैं जिनकी यात्रा करके व्यक्ति स्वयं को समस्त पापों से मुक्त होने तथा भवसागर से पार हो जाने की मिथ्या धारणा बनाए हुए हैं। वास्तव में यदि पापों से मुक्त होना इतना ही आसान है तो यह तो किसी के लिए भी असंभव नहीं है। लोग पैदल या किराया खर्च करके वहां पहुंच सकते हैं। ये कल्पित किए गए धाम हैं—पूर्व में जगन्नाथ-धाम, दक्षिण में रामेश्वरम्-धाम, पश्चिम में द्वारिकापुरी-धाम, और उत्तर में बद्रीनाथ-धाम। इन में से तीन भगवान् विष्णु को समर्पित है और चौथा धाम रामेश्वरम् भगवान् शिव को समर्पित है। बद्रीनाथ धाम उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र में अलकनन्दा के तट पर स्थित है। लोगों की मान्यता के अनुसार जब तक व्यक्ति इस धाम की यात्रा न कर ले, उसकी तीर्थयात्रा अधूरी ही रहती है। जगन्नाथपुरी धाम उड़ीसा प्रदेश में समुद्र के तट पर स्थित है। रामेश्वरम् धाम भारत की दक्षिण सीमा के अन्तिम स्थल पर स्थित है। यह स्थान पहले भूमि से मिला हुआ था, किसी भूगर्भीय परिवर्तन के कारण इस अन्तरीप का मध्य भाग दब गया और वहाँ समुद्र आ गया। इस तरह यह एक समुद्री द्वीप में स्थित है। द्वारकापुरी धाम सौराष्ट्र प्रदेश में समुद्र के किनारे स्थित है। समय-समय पर इन तथाकथित धामों से सम्बन्धित अनेक काल्पनिक कथाएं एवं माहात्म्य आदि भी लिख दिए गए हैं जिनकी विस्तृत-चर्चा हम यहां विस्तार भय से नहीं कर रहे हैं।

एक पौराणिक कथा के अनुसार जगन्नाथ धाम में सदाचार-भ्रष्ट पुण्डरीक तथा उसका मित्र अम्बरीष तपस्या करके पवित्र हो गये थे। यह मन्दिर राजा इन्दुधुम्न (इन्द्रदमन) ने बनवाया था। आश्चर्य यह है कि मूर्ति में श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहिन सुभद्रा को श्रीकृष्ण तथा बलराम के मध्य में बिठाया गया है। भारतीय शिष्टाचार के अनुसार एक के वाम भाग में होने से पत्नी और दूसरे के दक्षिण भाग में होने से माता के समान होती है। काल्पनिक कथा में ऐसा नारद के कहने पर किया गया है... यहां पर प्रसाद के रूप में भात ठेकेदारों के माध्यम से बिकता है..... इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में चर्चा की है। वहां प्रश्न किया गया—'भला यह तो जाने दो। परन्तु जगन्नाथ में प्रत्यक्ष चमत्कार है। एक कलेवर बदलने के समय चन्दन की लकड़ी समुद्र में से स्वयंमेव आता है। चूल्हे पर ऊपर-ऊपर सात हण्डे धरने से ऊपर-ऊपर के पहिले-पहिले पकते हैं और जो कोई वहां जगन्नाथ की परसादी न खावे, तो कुष्ठी हो जाता है और रथ आप-से आप चलता, पापी को दर्शन नहीं होता है। इन्द्रदमन के राज्य में देवताओं ने मन्दिर बनाया है। कलेवर बदलने के समय एक राजा एक पण्डा एक बढ़ई मर जाने आदि यमत्कारों को तुम झूंठ न कर सकोगे?'

इसके उत्तर में महर्षि लिखते हैं—'जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की सेवा की थी, वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था। उन्होंने ये सब बातें झूंठ बताई। किन्तु विचार से निश्चय यह है कि जब कलेवर बदलने का समय आता है, तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं। वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है। उसको ले सुतार लोग मूर्तियां बनाते हैं।

जब रसोई बनती है, तब कपाट बन्द करके रसोइयों के विना अन्य किसी को न जाने न देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्राकार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे घी मट्टी और राख लगा, छः चूल्हों पर चावल पका, उनके तले मांजकर उस बीच के हण्डे में उसी समय चावल डाल (उसके ऊपर उन छः हण्डों को रख) छः चूल्हों के मुख लोहे के तवों से बन्ध कर, दर्शन करने वालों को जो कि धनाढ्य हों, बुलाके दिखलाते हैं। ऊपर-ऊपर के हण्डों से चावल निकाल, पके हुए चावलों को दिखला, नीचे के कच्चे चावल निकाल, दिखा के उनसे कहते हैं कि 'कुछ हण्डों के लिए दख दो।' 'आंख के अन्धे गांठ के पूरे' रुपये अशर्फी धरते और कोई-कोई मासिक भी बांध देते हैं। शूद्र नीच लोग मन्दिर में नैवेद्य लाते हैं। जब नैवेद्य हो चुकता है, तब वे शूद्र नीच लोग जूठा कर देते हैं। पश्चात् जो कोई रुपया देकर हण्डा लेवे उसके घर पहुंचाते और दीन गृहस्थ और साधु-सन्तों को लेके शूद्र और अन्त्यज पर्यन्त एक पंक्ति में बैठ जूठा एक-दूसरे का भोजन करते हैं। जब वह पंक्ति उठती है, तब उन्हीं पत्तलों पर दूसरों बैठाते जाते हैं। महा अनाचार है और बहुतेरे मनुष्य वहां जाकर उनका जूठा न खाकर अपने हाथ बना-खाकर चले आते हैं। कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत से कुष्ठी हैं। नित्यप्रति जूठा खाने से भी रोग नहीं छूटता और यह जगन्नाथ में वाममार्गियों ने 'भैरवीचक्र' बनाया है। क्योंकि सुभद्रा श्रीकृष्ण और बलदेव की बहिन लगती है। उसी को दोनों भाइयों के बीच में स्त्री और माता के स्थान में बैठाई है। जो भैरवी चक्र न होता, तो यह बात कभी न होती।

और रथ के पहियों के साथ कला बनाई है। जब उनको सूधी घुमाते हैं, तब रथ चलता है। जब मेले के बीच में पहुंचता है तभी उसकी कील को उलटी घुमा देने से रथ खड़ा रह जाता है। पुजारी लोग पुकारते हैं—'दान देओ, पुण्य करो, जिससे जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें, अपना धर्म रहे।' जब तक भेंट आती जाती है, तब तक ऐसे ही पुकारते जाते हैं। जब आ चुकती है, तब एक ब्रजवासी अच्छे कपड़े दुशाला ओढ़कर आगे खड़ा रहके हाथ जोड़ स्तुति करता है कि हे जगन्नाथ स्वामिन्! आप कृपा करके रथ को चलाइए, हमारा धर्म रखो। इत्यादि बोलके साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर रथ पर चढ़ता है और 'जय-जय' शब्द बोल सहस्रों मनुष्य रस्सी खींचते हैं, रथ चलता है। जब बहुत से लोग दर्शन को आते हैं, तब इतना बड़ा मन्दिर है कि जिसमें दिन में भी अन्धेरा रहता है और दीपक जलाना पड़ता है। उन मूर्तियों के आगे पर्दे खींचकर लगाने के पर्दे दोनों ओर रहते हैं। पण्डे-पुजारी भीतर खड़े रहते हैं। जब एक ओर वाले ने पर्दे को खींचा, झट मूर्ति आड़ में आ जाती है। तब सब पण्डेऔर

शेष पृष्ठ 2 पर....

thearyasamaj.org

पाप का फल भोगना ही होगा.... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

पुजारी पुकारते हैं—'तुम भेंट धरा, तुम्हारे पाप छूट जायेंगे, तब दर्शन होगा, शीघ्र करो।' वे बेचारे भोले मनुष्य धूर्तों के हाथ लूटे जाते हैं और छट पर्दा दूसरा खींच लेते हैं, तभी दर्शन होता है। जब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खाके तिरस्कृत हो चले आते हैं।

'इन्द्रमन' वही है कि जिसके कुल में लोग अब तक कलकत्ते में हैं। वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था। उसने लाखों रुपये लगाकर मन्दिर बनवाया था। इसलिए कि आर्यावर्त देश के भोजन का बखेड़ा इस रीति से छुड़ावें। परन्तु मूर्ख कब छोड़ते हैं? 'देव' मानो तो उन्हीं करीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया। राजा पण्डा और बड़ई उस समय नहीं मरते, परन्तु वे तीनों वहां प्रधान रहते हैं। छोटों को दु:ख देते होंगे, उन्होंने सम्मति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय वे तीनों उपस्थित रहते हैं, मूर्ति का हृदय पोला रक्खा है। उसमें सोने के सम्पुट में एक सालगराम रखते हैं कि जिसको प्रतिदिन धोके चरणामृत बनाते हैं। उस पर रात्रि की शयन आरती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा। उसको धोके उन्हीं तीनों कोपिलाया होगा कि जिससे वे कभी मर गए होंगे। मरे तो इस प्रकार और भोजनभट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथ जी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गए। झूठी बातें पराए धन ठगने के लिए बहुत-सी हुआ करती हैं।

रामेश्वर-धाम के सम्बन्ध में भी अनेक प्रकार की काल्पनिक गाथाएं गढ़ ली गई हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार जब श्रीराम रावण का वध करने के बाद सीतासहित अयोध्या जा रहे थे तो मार्ग में वे गंधमादन पर्वत पर रुके। उन्होंने वहां के ऋषि-मुनियों से पुलस्त्य वंशज रावण के वध से होने वाली ब्रह्महत्या के पाप से छुटकारा पाने का उपाय पूछा तो ऋषियों ने उनसे कहा कि वे इस क्षेत्र में शिवलिंग की स्थापना करें। हनुमान जी को शिवलिंग लाने के लिए भेजा गया मगर उन्हें बहुत विलम्ब हो गया अत: सीता ने वहां बालू से बने शिवलिंग की स्थापना कर दी। हनुमान शिवलिंग लेकर लौटे तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। श्रीराम ने उनसे कहा कि वे इस बालू के शिवलिंग को हटाकर अपने द्वारा लाये गये शिवलिंग की स्थापना कर लें। मगर हनुमान द्वारा अपनी पूरी शक्ति लगाने पर भी वह बालू का लिंग नहीं हट सका अत: हनुमान के द्वारा लाये गये शिवलिंग की स्थापना भी पास में ही कर दी गई.... महर्षि दयानन्द जी अपने ग्रन्थ में प्रश्न उठाते हैं—'जो रामेश्वर में गङ्गोत्तरी के जल चढ़ाने समय लिंग बढ़ जाता है, क्या यह भी बातें झूठी हैं? उत्तर-झूठी। क्योंकि उस मन्दिर में भी दिन में अंधेरा रहता है। दीपक रात-दिन जला करते हैं। जब जल की धारा छोड़ते हैं, तब उस जल में बिजुली के समान दीपक का प्रतिबिम्ब झलकता है और कुछ भी नहीं। न पाषाण घटे न बढ़े, जितने का उतना रहता है। ऐसी लीला करके बेचारे निर्बुद्धियों को ठगते हैं।'

प्रश्न-रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध होती, तो रामचन्द्र मूर्ति-स्थापना क्यों करते? और वाल्मीकि जी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर-रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम चिह्न भी न था। किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ 'राम' नामक राजा ने मन्दिर बनवा लिंग का नाम रामेश्वर धर दिया है। जब रामचन्द्र सीता को ले, हनुमान् आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या का आते थे, तब सीता जी ने कहा था कि—

अत्र पूर्व महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।
सेतुबन्ध इति विख्यातम्॥

(वा०रा० लंका काण्ड)

हे सीते! 'तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु-व्यापक देवों का देव 'महादेव' परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई और देख, यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके उस रावण को मार तुझको ले आए।' इसके सिवाय वहां वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।'

द्वारिका-धाम के सम्बन्ध में महर्षि जी ने इस प्रकार लिखा है—

प्रश्न-द्वारिका जी के रणछोड़ जी, 'नर्सीमहता' के पास हुण्डी भेज दी और उसका ऋण चुका दिया, इत्यादि बात भी क्या झूठ है?

उत्तर-किसी साहूकार ने रुपये दे दिये होंगे। किसी ने झूठा नाम उड़ा दिया होगा कि श्रीकृष्ण ने भेजे। जब संवत् 1914 के वर्ष में तोपों के मारे मन्दिर-मूर्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं, तब मूर्ति कहां गई थीं? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता, तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाए, उसके शरणागत क्यों न पीटे जायें?

बद्रीनाथ-धाम के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं—'वैसे ही 'बद्रीनारायण' ठग-विद्या वाले बहुत बैठे हैं।'

वास्तव में इन तथाकथित व्रतों, तीर्थों तथा धामों के प्रचलन तथा अनेक प्रकार के पाखण्डों और आडम्बरों का मुख्य कारण यही है कि व्यक्ति अपने किये हुए पापों से बिना भोगे ही मुक्ति चाहता है। जबकि यह मान्यता एकदम ही शास्त्र विरुद्ध तथा बुद्धिगम्य नहीं है। बहुत प्रसिद्ध उक्ति है—**'जैसी करनी वैसी भरनी।'** कुछ लोगों का कहना है कि यदि परमात्मा में पापों को क्षमा करने की भी शक्ति नहीं है तो फिर उसे सर्वशक्तिमान् क्यों कहा जाता है? सर्वशक्तिमान् होते हुए भी वह अपने जैसा ईश्वर नहीं बना सकता है, स्वयं को मार नहीं सकता, चोरी नहीं कर सकता.... यह भी विचारणीय है कि यदि किये हुये पाप क्षमा ही नहीं होते हैं तो फिर प्रायश्चित्त का क्या तात्पर्य है? इस सम्बन्ध में योगिराज महर्षि दयानन्द जी (पूना प्रवचन—छठा उपदेश) कहते हैं—'अब कोई ऐसी शंका निकाले कि पूर्वकृत पापों का दण्ड जीव को बिना भोगे छुटकारा नहीं मिल सकता यह हमारा मत है, तो फिर पश्चात्ताप का कुछ भी लाभ नहीं है क्या? इसका उत्तर यह है कि पश्चात्ताप से पाप-क्षय नहीं होता, परन्तु आगे पाप करना बन्द हो सकता है।' **कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात् प्रमुच्यते। नैवं कुर्या पुनरिति निवृत्या पूयते तु सः॥** (मनु० 11.230) चाहे कितना ही पश्चात्ताप किया जावे तो भी कृत पापों को तो भोगना ही होगा। इसका दृष्टान्त—जैसे कोई कुएं में गिरा और उसके हाथ-पांव टूट गए तो अब चाहे जितना पश्चात्ताप करे, तो भी उसके हाथ-पांव जो टूटे सो टूट ही चुके, वह तो कुछ भी किये नहीं छूट सकता। हाँ, आगे के लिए कुएं में न गिरेगा, इतना ही केवल होगा। प्रायश्चित्त का केवल इतना महत्त्व है कि इससे व्यक्ति आगे करने वाले पापों से बच जाता है। इसलिए प्रायश्चित्त से कर्मफल से न बच सकने पर भी प्रायश्चित्त की उपयोगिता है.... उससे वासना का प्रेरक अंश नष्ट हो जाता है और प्रायश्चित्त करने के बाद उस दुष्कृत्य के करने की, जिसका प्रायश्चित्त किया गया है, प्रेरणा करने वाली कोई वस्तु अन्त:करणों में बाकी नहीं रहती। यह थोड़ी बात नहीं है इसलिए प्रायश्चित्त को, उन्नत जीवन बनाने का एक मुख्य साधन समझना चाहिए। इस प्रकार हमारे सामने यह बात भली प्रकार से स्पष्ट हो जाती है कि प्रायश्चित्त आदि से किये गये बुरे कर्मों के फल से तो नहीं बचा जा सकता है मगर हां व्यक्ति आगे दुष्कर्म करने से बच सकता है.... क्योंकि कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है।

उपरोक्त विवेचन से यह भली प्रकार से स्पष्ट हो गया है कि बिना भोगे व्यक्ति के कर्म कभी भी क्षीण नहीं होते हैं। स्वयं परमपिता परमेश्वर भी व्यक्ति के किए हुए कर्मों को क्षमा नहीं कर सकता फिर किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा या किसी स्थान विशेष में जाकर किये हुए पाप कैसे क्षमा हो सकते हैं? इसलिए भवसागर से पार उतरने के लिए जिन तथाकथित व्रतों, तीर्थों तथा धामों आदि की कल्पनाएं कर रखी हैं उनका इस रूप में कोई महत्त्व नहीं है। क्योंकि व्यक्ति के कर्म ही उसे अच्छी बुरी गति देने के कारण हैं। अत: व्यक्ति को अपने कर्मों को ही सुधारना चाहिए। यह एक ध्रुव सत्य है कि कोई भी कर्म करने के बाद उसके फल की व्यवस्था परमात्मा के हाथ में चली जाती है मगर परमात्मा की बड़ी कृपा यह है कि उन्होंने हमें कर्म करने में स्वतन्त्र रखा है। अत: हमें इस कर्म-स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर अपने जीवन में पुण्य कर्मों का संचय करना है, इसी में जीवन की सार्थकता है।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

योग

-: मन्त्र :-

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यऽउदानाय त्वा॥

यजुः० 7.6॥

अर्थ—हे (सुभव) शुभैश्वर्य से सम्पन्न योगी! तू (स्वाङ्कृतः असि) अपने तप से स्वयं इस अवस्था तक पहुँचे हो। (स्वाहा) तेरी इस योग साधना से तुझे (विश्वेभ्यः) समस्त (इन्द्रियेभ्यः) इन्द्रियों सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान, (पार्थिवेभ्यः) पृथिवी लोक सम्बन्धी विज्ञान (दिव्येभ्यः) द्यौलोक सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान (त्वा) तुझे (अष्ट) मैं प्राप्त कराता हूँ। मैं तुम्हारे (देवेभ्यो मरीचिपेभ्यः) मस्तिष्क में दिव्य गुणों की उत्पत्ति और ज्ञान का प्रकाश करता हूँ। (त्वा) और तुझे (उदानाय) उदान प्राण जो अन्त समय में जीवात्मा को शरीर से निकालकर ले जाता है उसका विज्ञान देता हूँ।

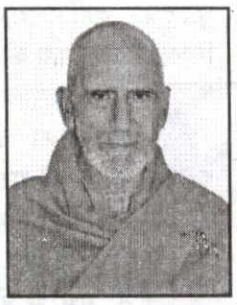

बहिरङ्ग योग में निष्णात योगी जब अन्तरङ्ग योग धारणा-ध्यान-समाधि में प्रवेश करता है, जब उसे सभी इन्द्रियों के विषय में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध की सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं। भूमि के गर्भ में क्या छिपा है उसे भी योगी जान लेता है। इसी भांति सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि की गति को भी जानने में समर्थ हो जाता है। उदान पर संयम करने से योगी अपने प्राण को ब्रह्मरन्ध्र से निकाल मुक्त हो जाता है।

मन्त्र का भावार्थ—मनुष्य जब तक श्रेष्ठाचार करने वाला नहीं होता तब तक ईश्वर भी उसको स्वीकार नहीं करता। जिसको ईश्वर स्वीकार नहीं करता उसका पूरा आत्मबल नहीं हो सकता और बिना आत्मबल के अत्यन्त सुख की प्राप्ति भी नहीं होती। भावार्थ मंत्र 7.8 में ही पूर्ण योगी और सिद्ध हो सकते हैं जो योगाभ्यास से पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् योग द्वारा करने का प्रयत्न करते हैं। जो यम-नियम का सेवन करते हुये सिद्धि को प्राप्त योगी हैं, उनके सान्निध्य में रहकर ही सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। यजुर्वेद में केवल इसी मन्त्र का देवता 'योगी' कहा है। **क्रमशः अगले अंक में....**

(साभार-वेदस्वाध्याय)

—आचार्य बलदेव

वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद् 'वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन' का आयोजन दिनांक 5,6,7 दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवासित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्, आचार्य सहित समाजसेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगणों के पधारने की सम्भावना है। अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेजे रहे हैं। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिन करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें। सम्मेलन में पधार कर अनुगृहीत करें।

—आचार्य, आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी, पो. पचेड़ा, जिला महासमुन्द (छत्तीसगढ़)
मो० 9617082000

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है?

तो फिर भला देर किस बात की? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक
दूरभाष : 01262-216222

यहाँ अवतारवाद मार खाता है

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

हजारों तर्कों से अवतारवाद का खण्डन किया जा सकता है तथा विद्वानों ने किया भी है। इस तथ्य का एक विवेचन इस प्रकार भी हो सकता है। 'ओ३म्' जो ईश्वर का मुख्य नाम है वह नाम राम, कृष्ण आदि तथाकथित अवतारों का नहीं हो सकता। इसी भांति इनके ब्रह्मा का नाम विष्णु नहीं हो सकता तथा विष्णु के ब्रह्मा व इन्द्र आदि नहीं हो सकते, इनके शिव आदि के विषय में भी ऐसा ही सोचना चाहिए। लेकिन गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार ये सभी ईश्वर के नाम हैं। 'ऋग्वेद' का कथन है—'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।' वह ईश्वर एक है उसे विप्र लोग अनेक नामों से जानते हैं। पाखण्डियों के शिव का नाम इन्द्र आदि कभी नहीं हो सकता।

अभी वर्तमान में 11.9.2014 को करौंथा सत्याग्रह के अमर शहीद संदीप आर्य के स्मृति द्वार का उद्घाटन गांव शाहपुर, पानीपत (हरयाणा) में हुआ। वहाँ प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० रामनिवास आर्य सृष्टि निर्माण के संदर्भ में ईश्वर की महिमा का बखान एक भजन द्वारा कर रहे थे। मुझे उस समय विचार सूझा कि कितना घोर अंधेर है कि जो रामपालदास जैसे तुच्छ व निकृष्ट व्यक्ति स्वयं को परमात्मा घोषित करते हैं। क्या यह सृष्टि रामपालदास ने बनाई है? क्या वह इसका पालन कर रहा है? अभी वर्तमान में आचार्य सोमदेव जी, ऋषि उद्यान, अजमेर का जो Somdevaryaarya के नाम से जो whatsapp. है उस पर रामपाल दास के चेले विकास दास ने ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज पर अनर्गल टिप्पणियां कीं। आचार्य सोमदेव जी ने उसके ऐसे उत्तर दिये कि यह दास न केवल बौखलाया बल्कि कुछ टिप्पणियों में आचार्य जी की विद्वत्ता का लोहा माना तथा घबराकर अपने फोन पर उनकी Site भी Block करने को कहा।

विद्वानों को ऐसे तर्क-वितर्क करते समय किसी प्रकार का आलस्य, बहाना व अभिमान नहीं दिखाना चाहिए। ऐसे मतोंका निरन्तर खण्डन चलने से ही वे ह्रास को प्राप्त होते हैं। धर्मवीर लेखराम आदि के खण्डन में ही ऐसी प्रबलता व सक्रियता थी कि विरोधी बौखला जाते थे, उन पर हमले करवाते थे।

विद्वानों द्वारा खुले प्रचार व खण्डन के अभाव में ही रामपालदास जैसे मतावलम्बियों के साथ आर्यसमाज का संघर्ष शारीरिक व कोर्ट-कचहरी स्तर तक पहुंचता है। धन्य हैं आचार्य सोमदेव जैसे विद्वान् जो यह शैली अपनाकर क्रियात्मक व ऋषि भक्त विद्वानों की श्रेणी में खड़े हो जाते हैं।

हिन्दी को सिंहासन पर बैठाने के लिए आन्दोलन होगा

भले ही केन्द्र में सरकार बदल गई है लेकिन देश की स्थिति को देखते हुए हिन्दी को सिंहासन पर बैठाने के लिए आन्दोलन करना ही होगा। देश के विश्वविद्यालयों के शिक्षक व छात्रों को संगठित करना होगा, यह कार्य तभी होगा। यह विचार विनय नगर स्थित 'कृष्ण भवन' में आयोजित 'भाषा शिक्षा संस्कृति व रोजगार' सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए 'सर्वखाप सर्वजात' के अध्यक्ष स्वामी कर्मपाल ने कहे। उन्होंने कहा कि 'शिक्षा व्यवस्था' बदलने के लिए सर्वखाप का पूरा सक्रिय सहयोग रहेगा। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए 'स्वास्थ्य विज्ञान विद्यालय' के कुलपति श्री सुखवीर सिंह सांगवान ने कहा देश में राष्ट्रभाषा का सम्मान होना चाहिए और राष्ट्रभाषा में हर काम होना चाहिए। मुख्यवक्ता श्री खजानसिंह गुलिया ने कहा हिन्दी लेखक व पत्रकार भाषा को बिगाड़ रहे हैं। हमें हिन्दी की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। हिन्दी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए न कि अनावश्यक रूप में अंग्रेजी-फारसी शब्दों का। पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. नरेश मिश्र ने कहा हिन्दी की शुरुआत अपने से करें तथा अब अंग्रेजी अनिवार्यता सहन नहीं करना चाहिए। सम्मेलन में प्रो. आत्मानन्द देशवाल, डॉ. जगदेवसिंह, बहन प्रमिला छिक्कारा अध्यक्ष बुनियाद शिक्षा समिति, मेजर मेहरसिंह मलिक, संजय राठी, जसबीर मलिक, वेदप्रकाश श्योराण, सत्यवीर शास्त्री पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा अनेक छात्रों ने भी कविता एवं भाषणों द्वारा अपने विचार रखे। मंच संचालन संयोजक महावीर शास्त्री ने प्रभावी ढंग से किया। **-महावीर 'धीर' संयोजक**

thearyasamaj.org

गुरु-शिष्य का पारम्परिक सम्बन्ध

❑ आचार्य वेदमित्र, पातञ्जल योगाश्रम, भऊ आर्यपुर, रोहतक 9355675408

श्रीराम की आज्ञा से हनुमान् जी सीता को खोजने हेतु समुद्र पार लंका पहुंचे। वन, उपवन खोजते-खोजते जब वे रावण की महलों में सीता की खोज कर रहे थे तब कक्ष की खिड़की से जब उन्होंने पारदर्शी वस्त्रों में नग्नसी रावण की रानियों को देखा तो आत्मग्लानि से भरकर सोचा नग्न स्त्री देखने से मैंने पाप कर दिया। **'काम दृष्टा मया विवस्त्रा रावणस्त्रियः'** परन्तु हृदय से तुरन्त भाव आया—माँ के शरीर को देखने पर **'न तु मे मनसा किंचिद् वैकृत्य-मुपद्यते'** किंचित् मन में काम भाव ही पैदा नहीं हुआ तो पाप कैसे? भारतवर्ष में ऐसे-ऐसे पवित्र ब्रह्मचारी घर-घर गुरुओं द्वारा बनाने की परम्परा है। शरीर, मन व शुद्ध आत्म-शिक्षा द्वारा प्रत्येक बालक हनुमान जैसा बन सकता है। बालक को स्नातक बनाने में गुरु का विशेष हाथ है। स्नातक यानि अन्तःकरण से नहाया-धोया। मन, मस्तिष्क का स्नान करवाने वाला आचार्य बालक को सब विद्या देकर स्नातक बना देता है। जन्म से नैसर्गिक ज्ञान पशु-पक्षियों में मनुष्य से अधिक होता है लेकिन समर्थ गुरु मिल जाये तो बालक अलौकिक शक्ति सम्पन्न हो सकता है।

स्वामी दयानन्द, चन्द्रगुप्त, वीर शिवाजी, अर्जुन के निर्माण में आचार्य का पुरुषार्थ है। बालक के प्रथम गुरु माता-पिता होते हैं। वे जितने विद्वान्, जितेन्द्रिय, धार्मिक और संयमी होंगे उतनी ही उत्कृष्ट संतान का निर्माण कर सकेंगे। दादा-दादी, चाचा-चाची इत्यादि पारिवारिक जनों की परवरिश, फिर आस-पास के पड़ोसी, विद्यालय में पढ़ाने वाले प्रशिक्षक, समाज व राष्ट्र के नैतिक धर्म, स्थिति, व्यक्तित्व सब मिलकर एक बालक की उन्नति व अवनति में ये गुरु की भूमिका ही निभाते हैं। ये सांसारिक दृष्टिकोण से एक सफल मनुष्य का निर्माण कर सकते हैं, लेकिन हनुमान जैसे परोपकारी, संयमी का निर्माण एक समर्थ आचार्य बिना नहीं हो सकता। एक अध्यापक, इंजीनियर, डॉक्टर, अधिकारी से आम आदमी भी स्वच्छ, मेहनती, ईमानदारी से ऐसी आशा करता है। यह अध्यात्म ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। वेद में जीविकोपार्जन के लिए शिक्षा की व्यवस्था सब अध्यात्म ज्ञान के देने के बाद देने की व्यवस्था है। चीनी यात्री इतिहास में लिखते हैं कि जब विदेशी भारत में उदरपूर्ति हेतु चिकित्सा आदि सीखने यहां आते तो उन्हें भी कठिनतम व्याकरण, दर्शन, वेद की शिक्षा पूर्व अवैदिक पढ़नी पड़ती थी। ब्रह्मचर्य के तप से ही एक तपोमय वैद्य, इंजीनियर, अधिकारी प्राप्त हो सकता है। वेद में ही कहा है—**ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे।** विद्या विना तप के नहीं आती। **प्रणति ब्रह्मचर्योपसर्पणानि कृत्वा सिद्धिर्-बहुकालात् तद्वत्।** सांख्य के आचार्य ऐसा ही कहते हैं।

वैदिक ऋषियों ने 20,600 वर्षों के उपरान्त सूर्य के भ्रमण के सिद्धान्त को तप से ही सिद्ध किया था। **सृ गतौ** धातु से निष्पन्न सूर्य शब्द के गागर में तप ने ऋषियों का नाम आज भी ऊँचा किया हुआ है। **सप्त दिशो नाना सूर्या**-यानि दुनिया के आधुनिक आंगल वैज्ञानिकों ने बड़ी दूरबीनों से आकाश में अनेक सूर्य देखे तो उस दिन अंग्रेजी भाषा बौनी हो गई, क्योंकि आंगल भाषा में सूर्य का बहुवचन नहीं है। वेद के प्रत्येक शब्द ही नहीं वर्ण में परमात्मा ने ज्ञान भरकर ही तो मनुष्य को समस्त ज्ञान दिया है। इसी वेद भगवान् के ज्ञान से वैदिकों ने द्यौलोक के पृष्ठ को देख लिया है। अनन्त ब्रह्माण्ड की सीमाओं के जिज्ञासु वैज्ञानिकों की व्यौड़ियां कुछ ढीली पड़ जावे अगर ये वेदभगवान् की शरण ले लेवें। वेद में कहा है बिना भार वाले परमात्मा ने अरबों-खरबों टन भार वाले ब्रह्माण्ड को धारण ही नहीं इसका संवर्धन भी निरन्तर किया है। पार्थिव 27 मील सुरंग में परमाणुओं की टक्कर से वैज्ञानिक अणुओं के अस्तित्व को 'गाड पार्टिकल' कहकर अपना पिण्ड छुड़ा रहे हैं। इन सूक्ष्म परमाणुओं से तो सूक्ष्म मन आदि हैं। ये ऐसे पदार्थ हैं जो इस मेरुदण्ड में कहीं भोजन करने की इच्छा, कहीं भोजन पचाने तथा कहीं पेट में पड़े अवशेष यानि मल को बाहर करने की ऐसी ही व्यवस्था कर रहे हैं जैसे सफाई कर्मचारी करता है। प्रत्येक शरीर की अनन्त कोशिकाओं में यह ऑटोमैटिक सिस्टम कैसी चेतना से हो रहे हैं। मन में वे चेतन परमाणु हैं जो 10 वर्ष पूर्व शिमला में खाये अति विशिष्ठ मीठे सेब के खाते समय जता रहे थे। आज के सेब के रस में और 10 वर्ष पूर्व सेब के रस के परमाणु जीव जैसे स्मृतिवान् ही होंगे।

वेद में जहाँ भौतिक ज्ञान का वर्णन है, वहीं इन्द्रिय, मन, बुद्धि, आत्मा, परमात्मा के सूक्ष्मतम ज्ञान का भी वर्णन है। इसी कारण ब्रह्मचारी तप की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। अपने गुरु द्वारा प्राप्त ब्रह्मचर्य की भावना से हनुमान के हृदय व मस्तिष्क इतने पवित्र हो गये कि वे अनृत दर्शन को भी अधर्म कह रहे हैं। आज भी विश्वविद्यालयों में यह आत्मबल जगाया जा सकता है। पेड़-पौधे, ग्रह, उपग्रह, पर पी-एच.डी. करने वाले शिक्षकों से बाह्य अन्न और पदार्थ अवश्य प्राप्त हो जावेंगे, लेकिन 5-10 वर्ष की एक अबला कन्या की कहानी का क्रूर अन्त अन्न न मिलने से नहीं हुआ। दूषित मस्तिष्क के एक विचार न धरती के पवित्रतम भाई सम्बन्ध को नरकमय कर दिया। मानव-मानव को ही नहीं पशु-पक्षियों को सुख दे सकता है। गाय के घृत दूध से जहाँ मानव को सर्वोत्तम भोजन मिलता है वहीं गाय को मानव का परिवार जैसा वात्सल्य मिलता है। मानव जीवन का लक्ष्य भी यही है। धरती पर गुरु वेदानुसार स्वर्ग स्थापित कर सकता है।

आचार्य वेदमित्र जी

स्थूल शरीर का जन्म तो मां के गर्भ से होता है पर सच्चे मानव का जन्म गुरु के गर्भ से यानि वेदज्ञान से होता है। इसे बालक का दूसरा जन्म कह सकते हैं, इसलिए उसको द्विज कहते हैं। अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है—**'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः। तं तिस्त्ररात्री उदरे बिभर्ति। तं जातं द्रष्टुं अभिसंयन्ति देवाः॥'** आचार्य या गुरु के गर्भ से पैदा होने वाले बालक की एक गुरु पिता की सुरक्षा तथा माता की करुणा, प्रेम, वात्सल्य दोनों जिम्मेदारियां एक साथ निभाता है। गुरु के पास आने के पश्चात् गुरु-शिष्य का सम्बन्ध कैसा होता है, ऐसा ऊँचा आदर्श भी भारत के अतिरिक्त कहीं और देखने को नहीं मिलेगा। आचार्य और शिष्य दोनों परस्पर एक-दूसरे के संकल्प से गुंथे होते हैं। उपनयन और वेदारम्भ संस्कार में यह मंत्र गुरु-शिष्य बोलते हैं—**मम व्रते हृदयं ते दधामि ममचित्तमनुचित्तं त अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व, बृहस्पति-स्त्वानिः शुनक्तु मह्यम्॥** अर्थात् गुरु कहता है कि मैं अपने व्रत को आपके हृदय में धारण करवाता हूँ। आज मेरा और आपका संकल्प एक ही होगा। मेरा और आपका चित्त, मन सब एक ही होंगे, विद्या के स्वामी उस बृहस्पति ने तुझे मेरे लिए बनाया है। गुरु और शिष्य दोनों की परस्पर इस संकल्पबद्धता में सम्बन्धों की घनिष्ठता स्वतः झलकती है, अर्थात् एक गर्भस्थ शिशु और माँ का जो सम्बन्ध होता है वही सम्बन्ध गुरु और शिष्य का होता है। इसलिए वैदिक भाषा में शिष्य को अन्तेवासी बोला जाता है। माता-पिता के लिए 1-2 बालक को पालना भी कठिन पुरुषार्थ है, उससे कहीं ज्यादा तप, पुरुषार्थ और मेहनत एक शिष्य को तैयार करने में एक गुरु को करनी होती है। अब शिष्य गुरु के सान्निध्य में समर्पित हो गया किन्तु उसे व्यक्तित्व संपन्न बनने के लिए गुरु के कई रूपों का सामना करना पड़ता है। अथर्ववेद में एक मंत्र आता है—**आचार्यो मृत्युः वरुणः सोम ओषधयः पयः।** अर्थात् आचार्य का सबसे पहला रूप मृत्यु है। कठोपनिषद् ने तो स्पष्ट ही आचार्य को यम कहा है। इसी अनुशासन को धारण करने के बाद हमारी जो भी पुरानी आदतें, विचार, संस्कार, कामनाएं व वासनाएं हैं उन सब को नष्ट करके नए सिरे से हमारा सृजन प्रारम्भ करता है। क्रमशः.....

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

रोहतक। दिनांक 18 अगस्त से रोहतक सैक्टर-1, देवीलाल पार्क में चल रहे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में सैकड़ों सपत्नीक यजमान व श्रद्धालुओं, विद्वानों द्वारा सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी ने वेदमंत्रों की वैज्ञानिक तथा सटीक व्याख्या करके पदे-पदे वेद-विज्ञान सिद्ध किया। वेद की एक ईश्वर व्यवस्था, बिना ऊँच-नीच के सब मनुष्य के समानतावादी विचार तथा आत्म-उत्थान के उच्च आदर्श की मन्त्रोक्त व्याख्या की। समाज के बिना मनुष्य जीवन ऐसे अधूरा है जैसे नासिका बिना प्राण क होवे। कार्यक्रम में रोहतक, सोनीपत, दिल्ली, गुड़गांव, बेरी, झज्जर, हिसार, जीन्द, गोहाना, नोएडा, पानीपत तथा उत्तराखण्ड के यजमान तथा स्थानीय धार्मिक जन सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में बहु आर्यपुर आश्रम के ब्रह्मचारी व युवा, रोहतक के श्री महावीर शास्त्री, श्री सुखवीर एसडीओ व उनका सारा परिवार, बहन दया आर्या, बहन स्नेहलता, श्री बलवीर आर्य, श्री सत्यवीर, श्री अमित डॉक्टर, श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री सत्यपाल जी व वैद्य सत्यप्रकाश जी का सारा परिवार दिन-रात सेवा में संलग्न रहा। कार्यक्रम में श्री सुशील जी आर्य तथा कन्या गुरुकुल जसात तथा नोएडा की ब्रह्मचारिणियों ने सुन्दर भजन भी प्रस्तुत किये। वेदपाठी ब्रह्मचारिणियों के अतिरिक्त गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भी थे। कार्यक्रम का समापन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री श्री मा० रामपाल आर्य जी ने सपत्नीक यजमान बनकर किया। कार्यक्रम के अन्तिम दिन पूर्णाहुति पर 2 घण्टे वृष्टियज्ञ प्रभु भी करते रहे। रोहतक में चार फुट पानी सड़क पर था। इसी प्रकार वेद के यज्ञों का सिलसिला चलता रहा। 12-14 सितम्बर 2014 को श्री सोमवीर आर्य बहु आर्यपुर अपने घर न्यू पालम विहार गुड़गांव में वैदिक योग आश्रम न्यू पालम विहार में सामवेद पारायण यज्ञ किया। आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में अनेक विद्वानों ने वेद प्रवचन किया।

thearyasamaj.org

गोगा नवमी पर एक चिन्तन

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में भादरा के पास गोगामेड़ी नाम का एक गांव व रेलवे स्टेशन है। प्रतिवर्ष यहाँ जन्माष्टमी के तुरन्त बाद गोगा नवमी को गोगा जी का भव्य मेला लगता है जो लगभग एक माह तक चहल-पहल का केन्द्र बना रहता है। उत्तरी भारत के सभी प्रान्तों से लाखों-लाखों की संख्या में लोग गोगावीर (पीर) में आस्था रखने वाले पीले वस्त्रों में डौंरू बजा-बजाकर इस मेले में भाग लेते हैं। रेवाड़ी रेलवे स्टेशन (NR) इसका निकटस्थ केन्द्र है तथा यहां ये गोगामेड़ी की विशेष ट्रेन चलाई जाती हैं तथा ट्रेनों में अतिरिक्त डिब्बे भी जोड़े जाते हैं। भीड़ का आलम यह है कि सभी ट्रेनों के भीतर तथा छत पर सवारियां लदी रहती हैं। सामान छूट जाना, जेब कटना, यहां तक कि छोटे अबोध बच्चों का पीछे रह जाना आम बात है। जहां मेला लगता है वहां लाखों की भीड़ जमा रहती है। दूर-दूर तक खेमे, तम्बू, टेंट लगाकर रातभर दीपक जलाकर हर चार-पांच व्यक्तियों का समूह डौंरू (डेरू) डफरी से डफ्फ-डफ्फ करता सुनाई देता है। मेले में तड़-तड़ की विशेष ध्वनि कानों में लगातार पड़ती रहती है जो मीलों दूर तक भी सुनाई पड़ती है। पंजाब के लोग भी पार्टी बनाकर हारमोनियम, ढोलक व चिमटा बजाकर गोगा जी का गुणगान करते हैं और यह सिलसिला प्रतिवर्ष संख्या में बढ़ता ही जा रहा है।

मार्च 1972 में चुनाव पार्टी में मुझे भादरा जाने का अवसर मिला। ट्रेक्टर में चलते हुए गोगामेड़ी के पास रुक कर एक ऊँचे स्थान पर गये। वहाँ सबसे ऊँचे स्थान पर एक मढ़ी (छोटा-सा भवन) हवेलीनुमा पुराने ढंग से बना देखा। वहाँ एक मजार बनी हुई थी तथा कोई व्यक्ति भी वहाँ था। हमने मढ़ी की छत पर से देखा तो गोगामेड़ी स्टेशन तक तथा चारों ओर आस-पास कोई मकान या झोपड़ी भी नहीं थी। केवल मेले के समय दुकान लगाने के स्थान जो मिट्टी के थोड़े ही दिखाई देते थे। आस-पास चने के खेत चारों ओर फैले हुए थे। पुनः दूसरी बार 1982 अगस्त में फेफाना गांव (चौ० कुम्भाराम का गांव) 10+2 स्कूल में प्राध्यापक पद पर स्थानान्तरण होने पर गोगामेड़ी को देखा। हमारे स्कूल के स्काऊट के बच्चों ने स्वयं सेवक के रूप में शिविर लगाया था तथा आर्यसमाज फेफाना के आर्ययुवकों ने भी व्यवस्था बनाये रखने व पाखण्ड का प्रचार रोकने हेतु शिविर लगाया था। रात्रि को वहाँ ठहरकर देखा कि अंधेरी रात में दूर-दूर तक लाखों की संख्या में दीपक टिमटिमा रहे थे और तड़-तड़-पड़-पड़ ध्वनि सतत सुनाई दे रही थी। अधिकांश लोग ऐसा मानते हैं कि एक वर्गविशेष ही गोगा को मानता है, परन्तु मैंने फेफाना गांव में रहते हुए प्रति रात्रि जोहड़ के किनारे दीपक जलाकर जाटों द्वारा डैंरू बजाते देखा है। भाव यह है कि गोगा में आस्था सभी वर्गों की है। गोगावीर बागड़ देश का राजपूत सरदार था कहते हैं राजा भर्तृहरि की तरह उन्हें गुरु गोरखनाथ का आशीर्वाद प्राप्त था। गोगावीर नीले घोड़े पर सवार होकर एक बड़ा नेज़ा (भाला) रखते थे जिस पर केसरिया ध्वज होता था। राजपूतों की परम्परा रही है कि युद्ध भूमि में केसरिया बाना पहनने का अर्थ है जीत या मृत्यु। समय व्यतीत होते-होते गोगावीर में आस्था रखने वालों के वस्त्र केसरिया से पीत रंग के हो गये तथा नेजे (भाले) के स्थान पर एक लम्बी छड़ी जिस पर कपड़े लपेट कर रखने लगे हैं। पहले गोगावीर के समय नगाड़ा बजाते थे। अब छोटी-छोटी डफरी डेंरू बजाते हैं। वीरता को दर्शाने हेतु कोई-कोई भगत लोहे की जंजीर को अपने शरीर पर जोर-जोर से मारता है। नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित होने के कारण, गोगावीर को समाधि दिये जाने के कारण पीर भी समझा जाने लगा तथा मुस्लिम समुदाय भी पीर में आस्था रखने लगा। जहाँ तक गोगा जी के सांपों के सम्बन्ध की बात है तो उस जमाने में बागड़ देश में झाड़-झंखाड़ जंगल ज्यादा थे तथा वर्षा ऋतु में सरीसृप भोजन की तलाश में अपने स्थान से बाहर निकलते थे तथा शीतकालीन समाधि लेने से पूर्व चूहां आदि की खोज में जहाँ-तहाँ दिखाई देते थे परन्तु अब बस्ती बन जाने पर सर्प नहीं हैं।

देशराज आर्य

गोगा नवमी को एक त्यौहार के रूप में मनाया जाने लगा। बुजुर्गों की कहावत है कि **'खाइये त्यौहार अनुसार और बरतिये व्यवहार अनुसार'** इसलिए गोगा नवमी को गुलगुले विशेष रूप से बनाये जाते हैं। तेल और गुड़ से शक्कर पारे, सुहाली तथा गुलगुले व मठरी आदि पकवान बनाये जाते हैं। अपने पूर्वजों को स्वास्थ्य-सम्बन्धी विशेष ज्ञान था। वे जानते थे कि किस ऋतु में कौन-सी वस्तु का उपयोग किया जाये। वर्षाऋतु में तेल पकवान गुलगुले पकौड़े विशेष स्वादिष्ट लगते हैं तथा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी होते हैं। इसे त्यौहार के साथ जोड़कर भावनात्मक रूप से इस परम्परा का चलन शुरू हुआ। गोगावीर का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। सदैव घोड़े पर सवार होकर युद्ध के लिए तैयार रहना होता था तथा भोजन रूप में गुलगुले शक्कर पारे आदि सदैव अपने पास रखते थे। प्रायः तेल के पकवान तीन-चार दिन तक खराब नहीं होते।

जहाँ तक आस्था और विश्वास का प्रश्न है, तो यह मानव की अपनी निजी सोच और विचारधारा है। यद्यपि अन्धानुसरण मानव को भ्रमित भी करता है। किसी भी आस्था स्थल के उद्गम तक जाकर सोच-विचार चिन्तन करना बुद्धिजीवी मानव का कर्त्तव्य है। स्वयं द्वारा कसौटी पर परखना अन्धे अनुसरण से कहीं ज्यादा ठीक रहता है। आस-पास के लोग मेले में प्रायः पैदल ही जाते हैं। बात पुरानी है। राह में कुछ लोग एक पेड़ की छांव में बैठ गये। आराम के बाद कुछ खाने की इच्छा हुई तो हाथ से एक-दो गुलगुले मिट्टी में गिर गये, पानी पीया तो वहां कुछ पानी भी गिर गया। उनके जाने के पश्चात् तो वहां से गुजरने वहां गुलगुले भी रखे और पानी भी छिड़का। सायं तक तो वहां गुलगुलों का ढेर लग गया। लोगों ने उस स्थान को भी पीर समझ चढ़ावा चढ़ाया। यह अन्धानुकरण नहीं तो क्या है? किसी ने भी वास्तविकता का पता लगाने की कोशिश नहीं की।

किसी धार्मिक स्थान को देखने तथा उसकी ऐतिहासिक जानकारी लेने में तो दोष नहीं, परन्तु भीड़ के सैलाब में जाना तो परेशानी उठाना ही है। लाखों लोगों की धक्का-पेल भीड़ में सम्मिलित होना समझदारी नहीं। अन्य दिनों जब भीड़-भड़क्का न हो तो सहज सुविधा के उस स्थान को देखा जा सकता है। देखने की उत्सुकता केवल इसलिए कि वास्तविकता के बारे में पता चल सके। इन सब प्राचीन स्थानों से ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तथा अन्धे अनुसरण से बचा जा सकता है।

शोक-समाचार

श्री निहाल सिंह दुहन पूर्व सरपंच ढाणी मांहू जिला भिवानी का निधन 84 वर्ष की आयु में 3.9.2014 को हो गया। भलेपन के कारण उनके मृत्यु का समाचार सुनकर गांव-गुहाण्ड में शोक की लहर फैल गई। दाह-संस्कार पर सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए। उन्होंने अपने सरपंच काल में गांव में अनेक रचनात्मक कार्य किये। दुहन साहब मिलनसार, दृढ़ ईश्वर विश्वासी, यज्ञप्रेमी, कई बार गांव में भजन मण्डली बुलाकर वेदप्रचार करवाया। आर्यसमाज के विद्वानों व भजनोपदेशकों का भोजन व्यवस्था व प्रचार की उत्तम व्यवस्था करते थे। प्रचार में स्वयं भी दिल खोलकर दान देते तथा लोगों से भी अपील करके दान दिलाते। वह अपने पीछे पढ़े-लिखे तथा हरयाणा सरकार में उच्च अधिकारी पांच सुपुत्र तथा तीन सुपुत्री छोड़ गये। साधन-सम्पन्न परिवार छोड़ गये। शोक प्रकट करने के लिए सरकारी अधिकारी, कर्मचारी व राजनेताओं का तांता लगा रहा। शान्तियज्ञ व श्रद्धाञ्जलि सभा 14.9.2014 को उनके गांव में उनके निवास स्थान पर किया गया।

निहाल सिंह दुहन

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, गांव नलवा, जिला हिसार

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (झज्जर)	26 सित० से 2 अक्तू० 2014
2.	आर्यसमाज लोहाणा जिला रेवाड़ी	25-26 अक्तूबर 2014
3.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8-9 नवम्बर 2014
4.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14-16 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

दर्शन-दिग्दर्शन

गतांक से आगे....

द्रष्टा (=देखने, सोचने वाले) की योग्यता, विद्या, रुचि और स्तर के भेद से देखने, सोचने में जहाँ अन्तर आना स्वाभाविक बात है, वहाँ देखने के साधनों के अन्तर से भी अन्तर हो जाता है। इस प्रकार देखने-सोचने की प्रक्रिया (द्रष्टा, दृश्य, देखने के साधन और देखने पर बनी राय के भेद से) चार रूपों में बंटी हुई है। इसी को दर्शनशास्त्र के शब्दों में प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण और प्रमा (प्रमिति) के नाम से स्मरण करते हैं। अर्थात् जानने वाला, जानने का विषय, जानने-समझने का साधन और जानने पर बनी धारणा, समझ इन शब्दों से दर्शन शब्द का अर्थ ज्ञान, समझ प्रतीत होता है।

अंग्रेजी भाषा में दर्शन के लिए फिलासफी शब्द आता है, जिसका अर्थ है—ज्ञान के प्रति प्रेम, अनुराग। वेदान्त दर्शन और मीमांसा दर्शन क्रमशः ब्रह्म तथा धर्म की जिज्ञासा (=जानने की इच्छा) से प्रारम्भ होते हैं। जिज्ञासा के सोच के स्तर के भेद से तीन रूप हैं। जैसे कि श्रवण (=पठन), मनन, निदिध्यासन। अत एव हम पहले किसी से कुछ सुनते हैं या प्रथम पढ़ते हैं, फिर उस पर विचार करते हैं और अन्त में उसकी सच्चाई को स्पष्ट करना चाहते हैं अर्थात् दर्शन=ज्ञान की प्रक्रिया मुख्य रूप से इन स्तरों से जुड़ी हुई है।

अध्यात्म-अधिकतर दर्शन शब्द अध्यात्म अर्थ में लिया जाता है, अर्थात् आत्मा सम्बन्धी ज्ञान, सोच। सभी दर्शनों में विशेष रूप से परमात्मा, जीवात्मा, जगत, शरीर तथा इन से सम्बन्धित विषयों की ही चर्चा मिलती है। साहित्य में आत्मा शब्द अनेक अर्थों में आता है, जैसे कि—शरीर, अन्तःकरण, बुद्धि, स्वभाव, सारतत्त्व, विचार शक्ति, साहस, शक्ति, पुत्र, अग्नि, वायु, सूर्य, जीवनतत्त्व, जीव, ईश्वर आदि। प्रमुख रूप से आत्मा शब्द परमात्मा और जीवात्मा इन दोनों के लिए आता है। परमात्मा-ब्रह्माण्ड में और जीवात्मा-विशेषतः पिण्ड (=शरीर) में विद्यमान, व्याप्त=पूर्ण है। अत एव इन दोनों को शास्त्रकार पुरुष शब्द से भी पुकारते हैं, क्योंकि ये दोनों अपने-अपने रूप में पूर्ण, व्याप्त, अधिष्ठाता, व्यवस्थापक हैं। अनेकत्र आत्मा शब्द से अधिकतर जीवात्मा का ग्रहण किया जाता है, क्योंकि अपने आपे को प्रथम समझ लेने पर परमात्मा को समझना सरल और सार्थक हो सकता है और आत्मज्ञान से ही जीवन सार्थक होता है। दर्शनों तथा उपनिषदों में अध्यात्म शब्द आत्मा और उससे जुड़े प्राण, मन, बुद्धि, इन्द्रिय, देह के लिए प्रयुक्त हुआ है। उन में इसका भी वर्णन प्राप्त होता है।

वैदिक दर्शन-प्राचीन भारतीय दर्शनों में सारी चर्चा वेद के आधार पर ही आरम्भ हुई है। अत एव ये अपने विषय की पुष्टि के लिए श्रुति '**श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः**' (मनु० 2.10) की ओर संकेत करते हैं अर्थात् वेद को परम प्रमाण मानते हैं। वेद को परम प्रमाण मानने से ही ये वैदिक दर्शन कहलाते हैं और वे हैं—वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य, मीमांसा तथा वेदान्त। वेद तथा वैदिक वाङ्मय को प्रमाण न मानने वाले चार्वाक, जैन, बौद्ध अवैदिक कहलाते हैं और तीनों का प्रादुर्भाव अपने से पूर्ववर्ती कुछ विचारों से मतभेद के कारण ही हुआ है। पाश्चात्य देशों में प्रादुर्भूत दर्शन को पाश्चात्य या पश्चिमी दर्शन कहा जाता है।

दर्शन की प्रक्रिया-प्रत्येक देखने, सोचने, समझने और समझाने वाला स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाता है। वह पहले मोटी-मोटी बातों को समझ-समझा कर उसके आधार पर सूक्ष्म रहस्यों का विचार सामने लाता है। अतः दर्शन का प्राथमिक अर्थ है—देखना और बाहर की आंखों से हम पहले आकार-प्राकार वाली चीजों को देखते हैं, फिर अन्दर की आंख (अन्तःकरण) से सोचते हैं। इस प्रकार जीवन की गुत्थियों या जिज्ञासाओं को समझने का हम प्रयास करते हैं। इसी को शास्त्रकार श्रवण (=पठन), मनन, निदिध्यासन शब्दों से स्पष्ट करते हैं। संसारी व्यवहार में भी सर्वत्र यही प्रक्रिया प्रचलित है और यही क्रम इन दर्शनों में भी अपनाया गया है। कहीं-कहीं दर्शन के लिए तर्क शब्द भी प्रयुक्त हुआ है और तर्क में भी स्पष्ट से अस्पष्ट को समुपस्थित किया जाता है।

न्यायदर्शन में निर्दिष्ट तर्क की परिभाषा विज्ञान की प्रक्रिया का स्मरण कराती है, क्योंकि किसी अर्थ, कार्य बात का जब तत्त्व ज्ञान नहीं होता (पर जानना चाहते हैं) तब उसमें कारण के जचाव से तत्त्वज्ञान के लिए जो युक्ति, विचार-विमर्श होता है, वही तर्क है।

क्रमशः अगले अंक में....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन

ग्राम उमरा (हिसार) में 8.9.14 को आर्यसमाज उमरा के प्रधान श्री बलवन्त सिंह आर्य की धर्मपत्नी धड़का देवी की 18वीं पुण्यतिथि पर यज्ञ का आयोजन किया गया। वेदप्रचार मण्डल हिसार के उपमंत्री श्री दिलबाग सिंह आर्य दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने यज्ञ करवाया तथा आत्मा-परमात्मा पर सरल शब्दों में प्रकाश डाला। वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्यों पर विचार रखे तथा शराब आदि बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया। स्नेही जी ने दिलबाग सिंह आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तोष आर्या की कपड़े की दुकान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सूबेदार रामकुमार मलिक, बलवीरसिंह आर्य, संदीप आर्य श्री जयराम, सूबेदार सरजीत आर्य, उपेन्द्र आर्य, प्रताप सिंह मलिक, ओमप्रकाश मलिक, सतपाल फौजी आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

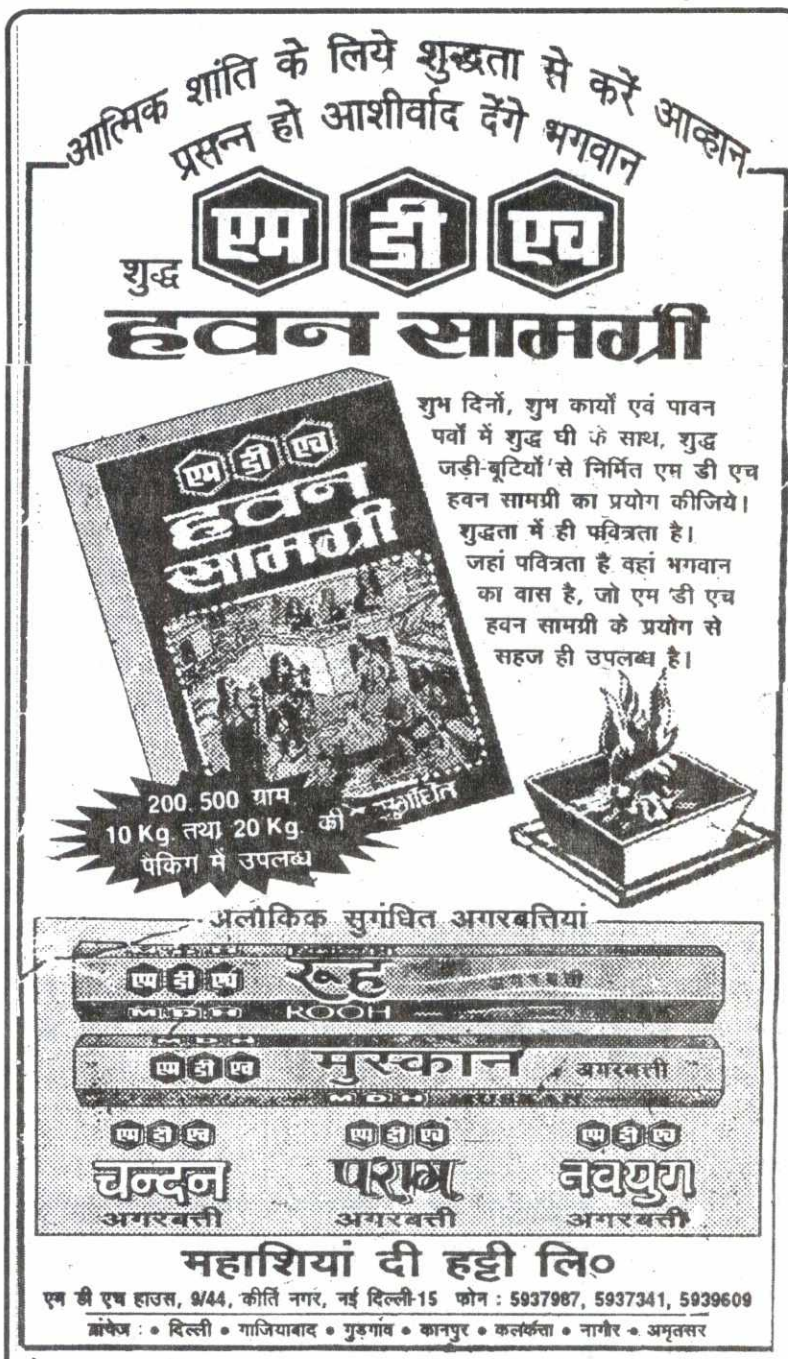

—महावीर आर्य, मन्त्री आर्यसमाज उमरा (हिसार)

लेखकों से निवेदन

लेखक महानुभावों से निवेदन है कि कृपया अपने लेख आदि पेपर की एक साइड में टाइप करवाकर व स्पष्ट लेखनी में भेजें। यह भी ध्यान रखें कि लेख ज्यादा बड़ा न हो। धन्यवाद।

—सम्पादक

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

एक बार फिर गुरुकुल ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया

गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य देवव्रत आचार्य, उप-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान व अध्यापक धर्मबीर के साथ छात्रवृति प्राप्त करने वाले विद्यार्थी।

कुरुक्षेत्र 10 सितम्बर 2014 हरियाणा विज्ञान प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में गुरुकुल के विद्यार्थियों को नौ-नौ हजार रुपये की छात्रवृति प्राप्त की। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के प्राचार्य ने बताया कि हर वर्ष राष्ट्रीय प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का आयोजन एससीईआरटी हरियाणा गुड़गांव द्वारा किया जाता है इसमें गुरुकुल के दो विद्यार्थी सुजेन्द्र व शशीरंजन ने परीक्षा को पास करके नौ-नौ हजार रुपयों की छात्रवृति प्राप्त की। गुरुकुल के विज्ञान विभाग के अध्यापक धर्मबीर ने बताया कि इस तरह की प्रतियोगितायों में हमारे गुरुकुल के विद्यार्थी बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं और इस वर्ष भी 121 बच्चों ने राष्ट्रीय मानक परीक्षा 266 विद्यार्थियों ने विज्ञान ओंलम्पियाड फॉउंडेशन तथा ४० बच्चे एनटीएसई के लिए तैयारी कर रहे हैं। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी व प्राचार्य देवव्रत आचार्य ने इन प्रतिभावान विद्यार्थियों को व तैयारी करवाने वाले अध्यापक धर्मबीर सिंह को बधाई देते हुए भविष्य में भी इस प्रकार की कामना व्यक्त की है।

शोक-समाचार

दिनांक 2.8.2014 को श्री हवासिंह हुड्डा रिटायर्ड चीफ इंजीनियर बिजली बोर्ड हरियाणा के सुपुत्र चौ० मनोहरसिंह आर्य का 76 वर्ष की आयु में कुछ समय से बीमार रहने से मृत्यु होगई जिसका समाचार सुनकर सभी परिजन, आर्यसमाज सांघी तथा सभी परिचितों को बड़ा दु:ख हुआ। स्व० हवासिंह जी की माता स्व० श्रीमती चलती देवी बड़ी ही आर्य विचारों की महिला थी। वह बचपन में अपने पैतृक गांव गुहणा से गुरुकुल भैंसवाल में चौ० ईश्वरसिंह का प्रचार सुनने जाती थी और उनके भजनों से प्रभावित होकर अपने पांचों पुत्रों और अपनी लड़की को शिक्षित किया। उनको उत्तम संस्कारों से ओतप्रोत किया जिसकी चर्चा आज तक होती है। स्व० हवासिंह जी के पिता भी दिल्ली में सर्विस करते थे लेकिन गांव में आने पर अपने मधुर स्वर से सावन और फागुन के महीने में सारी-सारी रात सत्संग के माध्यम से भजन सुनाते रहते थे। परिवार की तरफ कम ध्यान देते थे, लेकिन समाज को पूरे समर्पित थे। स्व० हवासिंह जी की पत्नी श्रीमती धन्नोदेवी भी उनके कार्य में पूर्ण सहयोग करती थी। किसी व्यक्ति को कार्यालय में जाने की बजाय घर पर ही यह कहकर साहब इधर-उधर के काम में व्यस्त होंगे, सायं को यही पर अपनी समस्या बता देना। स्व० हवासिंह जी ने अपने सेवा के कार्यकाल में जिन्हें भी सरकारी सेवा में नियुक्त किया उनकी योग्यता और गरीबी के आधार पर उन्हें चुना। उन्होंने किसी की सिफारिश नहीं मानी जिनकी चर्चा आज तक होती है। इसी त्याग और तपस्या के कारण इनका सारा परिवार अच्छी शिक्षा व उच्च पदों पर सर्वित कर रहे हैं। यह परिवार अपने पिता स्व० मनोहर सिंह के नाम से गांव में मनोहर सिंह मैमोरियल ट्रस्ट का संचालन कर रहा है। जो छात्र पहला व दूसरा स्थान प्राप्त करते उन्हें आर्थिक मदद देकर सम्मानित करते थे।

दिनांक 8.8.2014 को उनके सुपुत्र श्री बसन्त जी के निवास स्थान गुड़गांव में शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी परिवार व परिजन इकट्ठे हुए। दो मिनट के मौन के पश्चात् परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि प्रभु दिवंगत आत्मा केा सद्गति प्रदान करे एवं स्व० हवासिंह जी की मृत्यु के पश्चात् परिवार व परिचित जनों को जो दु:ख हुआ है, वह सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—देवेन्द्र सिंह आर्य, भलेराम आर्य, सांघी, जिला रोहतक

जो जन ईश्वर भक्त, उन्हीं को सफल बनाना

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

पं. नन्दलाल 'निर्भय'

प्यारा भारत देश था, दुनिया का सरताज।
भारत वीरों का सुनो, था जगती में राज॥
था जगती मे राज, सभी करते थे आदर।
चरित्रवान् ईमानदार थे, सब नारी-नर॥
सत्य अहिंसा सदाचार के, सब थे पालक।
शासक थे गुणवान, राम विक्रम से लायक॥

अविद्या रूपी रोग से, पनप गयी थी फूट।
फूट आपसी से हुई, आयावर्त की लूट॥
आर्यावर्त की लूट, गुलामी जिससे आई।
विदेशियों ने यहाँ, रात-दिन आफत ढाई॥
आजादी की मांग यहाँ, जो जन करते थे।
देशभक्त, गुणवान, सुजन निशदिन मरते थे॥

देव दयानन्द ने किया, पावन वेद-प्रचार।
जागे सोये भारती, ऋषि की सुन हुंकार॥
सुन ऋषि की हुंकार, देश के वीर दहाड़े।
तात्या टोपे, तुलाराम ने, दुष्ट पछाड़े॥
नन्दकिशोर मंगल पाण्डे, अरु लक्ष्मीबाई।
रणधीरों ने स्वतन्त्रता की, लड़ी लड़ाई॥

भारत माँ के लाडले, थे सांगा प्रताप।
तेग बहादुर ने किया, पावन प्रणव जाप॥
पावन प्रणव जाप, धर्महित शीश कटाया।
गोविंद शिवा महान, देशहित युद्ध मचाया॥
बिस्मिल शेखर भगत सिंह, ने फांसी खाई।
नेता वीर सुभाष, निराला था बलदाई॥

देश धर्म पर हो गये देशभक्त कुर्बान।
भारत माँ की कर गये, जग में ऊँची शान॥
जग में ऊँची शान, धन्य था उनका जीवन।
उनको कर लो याद, बनो नर-नारी सज्जन॥
भला इसी में युवक-युवतियों, कदम बढ़ाओ।
देशभक्त बलवान बनो, कर्त्तव्य निभाओ॥

विधान सभा का अब यहां, होगा शीघ्र चुनाव।
धूर्त चलायेंगे सुनो, अपने-अपने दांव॥
अपने-अपने दांव, सज्जनों मत घबराना।
किया भला का क्या काम, पूछना, भूल जाना॥
जो जन ईश्वर भक्त, उन्हीं को सफल बनाना।
खुदगर्जों को कभी न, अपने मुंह लगाना॥

संपर्क-आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्यसमाज गोकर्ण मार्ग, रूपनगर, रोहतक का वार्षिकोत्सव बुधवार 1 अक्तूबर रविवार से 5 अक्तूबर, 2014 तक अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाएगा। साथ ही अथर्ववेद पारायण बृहद् यज्ञ भी होगा। आप सभी इष्ट-मित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ उठायें।

कार्यक्रम

यज्ञ, भजन, उपदेश-प्रात: 7.30 से 10.30 बजे तक
यज्ञ - मध्याह्न पश्चात् 3 से 5 बजे तक
भजन एवं प्रवचन - रात्रि 7.30 से 10 बजे तक

आमंत्रित विद्वान्

यज्ञ ब्रह्मा एवं उपदेशक - **आचार्य श्री वीरेन्द्र जी** (सहारनपुर)
भजनोपदेशक - **श्री संदीप जी आर्य** (मुजफ्फरनगर)

विशेष कार्यक्रम

(1) आर्य विद्वानों के सम्मान के क्रम में इस वर्ष सुप्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री मामचन्द पथिक जी को सम्मानित किया जाएगा।

(2) दिनांक 24 सितम्बर से 30 सितम्बर तक प्रतिदिन रात्रि 7.30 से 8.45 बजे तक महापुरुषों के जीवन, देशभक्ति, सामाजिक एवं पारिवारिक विषयों पर बनी रोचक, शिक्षाप्रद एवं प्रेरक लघु फिल्मे दिखाई जायेंगी।

सम्पर्क-9466749992-3, 9467713527, 9896391574

thearyasamaj.org

पांच क्लेशों का त्याग

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती,
संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

मनुष्य परमेश्वर की उपासना करके अविद्या आदि क्लेश तथा अधर्माचरण आदि दुष्ट गुणों का निवारण करके शुद्ध विज्ञान और धर्मादि शुभ गुणों के आचरण से आत्मा की उन्नति करके, जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। वे पांच क्लेश ये हैं—

अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः॥

(योगदर्शन 2/3)

एक 'अविद्या', दूसरा 'अस्मिता', तीसरा 'राग', चौथा 'द्वेष' और पांचवां 'अभिनिवेश'।

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्॥

(योगदर्शन 2/4)

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

उनमें से अस्मितादि चार क्लेशों और मिथ्या भाषणादि दोषों की माता अविद्या है, जो कि मूढ जीवों को अन्धकार में फँसा के जन्म-मरणादि दुःखसागर में सदा डुबाती है। परन्तु जब विद्वान् और धर्मात्मा उपासकों की सत्यविद्या से अविद्या नष्ट हो जाती है, तब वे जीव मुक्ति को प्राप्त होते हैं। अविद्या के लक्षण ये हैं—

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या॥ (योगदर्शन 2/5)

अनित्य अर्थात् कार्य (जो शरीर स्थूल पदार्थ तथा लोकान्तर) में नित्य बुद्धि तथा जा नित्य अर्थात् ईश्वर, जीव, जगत् का कारण, क्रिया क्रियावान् गुण-गुणी और धर्म-धर्मी हैं, इन नित्य पदार्थों का परस्पर सम्बन्ध है, इनमें अनित्य बुद्धि का होना, यह अविद्या का प्रथम भाग है। तथा 'अशुचि' मल-मूत्र आदि के समुदाय दुर्गन्ध रूप मल से परिपूर्ण शरीर में पवित्र बुद्धि करना तथा तालाब, बावरी, कुण्ड, कुआं और नदी आदि में तीर्थ और पाप छुड़ाने की बुद्धि करना और उनका चरणामृत पीना, एकादशी आदि मिथ्या व्रतों में भूख-प्यास आदि दुःखों का सहना, स्पर्श इन्द्रिय के भोग से अत्यन्त प्रीति करना इत्यादि अशुद्ध पदार्थों को शुद्ध मानना और सत्यविद्या, सत्यभाषण, धर्म, सत्संग, परमेश्वर की उपासना, जितेन्द्रियता, सर्वोपकार करना, सबसे प्रेमभाव से वर्तना आदि शुद्ध व्यवहार और पदार्थों में अपवित्र बुद्धि करना, यह अविद्या का दूसरा भाग है तथा दुःख में सुख अर्थात् विषय-तृष्णा, काम, लोभ, मोह, शोक, ईर्ष्या, द्वेष आदि दुःखस्वरूप व्यवहारों में सुख मिलने की आशा करना, जितेन्द्रियता, निष्काम, शम, सन्तोष, विवेक, प्रसन्नता, प्रेम, मित्रता आदि सुखरूप व्यवहारों में दुःख बुद्धि का करना, यह अविद्या का तीसरा भाग है। इसी प्रकार अनात्मा में आत्मबुद्धि अर्थात् जड़ में चेतन भाव और चेतन में जड़ भावना करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार की 'अविद्या' संसार के अज्ञानी जीवों को बन्धन का हेतु होके उनको सदा नचाती रहती है। परन्तु विद्या अर्थात् पूर्वोक्त अनित्य, अशुचि, दुःख और अनात्मा में अनित्य, अपवित्रता, दुःख और अनात्मा बुद्धि का होना तथा नित्य, शुचि, सुख और आत्मबुद्धि करना, यह चार प्रकार की विद्या है। जब विद्या से अविद्या की निवृत्ति होती है, तब बन्धन से छूट के जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतैवास्मिता॥

(योग० 2/6)

दूसरा क्लेश अस्मिता कहाता है अर्थात् जीव और बुद्धि को मिले के समान देखना, अभिमान और अहंकार से अपने को बड़ा समझना इत्यादि व्यवहार को 'अस्मिता' जानना। सम्यंक् विज्ञान से अभिमान आदि के नाश हो जाने से इसकी निवृत्ति हो जाती है, तब गुणों के ग्रहण में रुचि होती है।

सुखानुशयी रागः॥ (योग० 2/7)

तीसरा 'राग' अर्थात् जो-जो सुख संसार में साक्षात् भोगने में आते हैं, उनके संस्कार की स्मृति से जो तृष्णा के लोभ सागर में बहना है इसका नाम 'राग' है। जब ऐसा ज्ञान मनुष्य को होता है कि सब संयोग, वियोग, वियोगान्त है, अर्थात् वियोग के अन्त में संयोग और संयोग के अंत में वियोग तथा वृद्धि के अन्त में क्षय और क्षय के अन्त में वृद्धि होती है, तब इसकी निवृत्ति हो जाती है।

दुखानुशयी द्वेषः॥ (योग० 2/8)

चौथा द्वेष कहाता है अर्थात् जिस अर्थ का पूर्व अनुभव किया गया हो, उस पर और उसके साधनों पर सदा क्रोध बुद्धि होना। इसकी निवृत्ति भी राग की निवृत्ति से ही होती है।

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः॥

(योग० 2/9)

पांचवां 'अभिनिवेश' क्लेश है जो सब प्राणियों को नित्य आशा होती है कि हम सदैव शरीर के साथ बने रहें अर्थात् कभी मरें नहीं सो पूर्वजन्म के अनुभव से होती है और इससे पूर्वजन्म भी सिद्ध होता है। क्योंकि छोटे-छोटे कृमि चींटी आदि जीवों को भी मरण का भय बराबर बना रहता है। इसी से इस क्लेश को 'अभिनिवेश' कहते हैं। जो कि विद्वान्, मूर्ख तथा क्षुद्र जन्तुओं में भी बराबर दीख पड़ता है। इस क्लेश की निवृत्ति उस समय होगी जब जीव परमेश्वर और प्रकृति अर्थात् जगत् के कारण को नित्य और कार्य द्रव्य के संयोग-वियोग को अनित्य जान लेगा। इन क्लेशों की शान्ति से जीवों को मोक्षसुख की प्राप्ति होती है।

तदभावात्संयोगाभावो हानं तद्दृशेः कैवल्यम्॥

(योग० 2/25)

अर्थात् जब विद्या क्लेश दूर होके विद्यादि शुभगुण प्राप्त होते हैं तब जीव सब बन्धनों और दुःखों से छूट के मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

तद् वैराग्यादपि दोषबीजक्षये कैवल्यम्॥

(योग० 3/25)

अर्थात् जब अविद्यादि क्लेश दूर होके विद्यादि शुद्ध गुण प्राप्त होते हैं, तब जीव बन्धनों और दुःखों से छूट के मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। यथा—

सत्त्वपुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति॥

(योग० 3/54)

अर्थात् सत्त्व जो बुद्धि, पुरुष जो जीव, दोनों की शुद्धि से मुक्ति होती है, अन्यथा नहीं।

तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम्॥

(योग० 4/26)

जब सब दोषों से अलग होके ज्ञान की ओर आत्मा झुकता है, तब कैवल्य मोक्ष धर्म के संस्कार से चित्त परिपूर्ण हो जाता है, तभी जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। क्योंकि जब तक बन्धन के कामों में जीव फँसता जाता है, तब तक उसको मुक्ति प्राप्त होना असम्भव है। कैवल्य मोक्ष का लक्षण यह है कि—

पुरुषार्थ शून्यानां गुणानां, प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति॥

(योग० 4/34)

अर्थात् कारण के सत्त्व, रज और तमोगुण और उनके सब कार्य पुरुषार्थ से नष्ट होकर आत्मा में विज्ञान और शुद्धि यथावत् होके स्वरूप प्रतिष्ठा जैसा जीव का तत्त्व है, वैसा ही स्वाभाविक शक्ति और गुणों से युक्त होके, शुद्ध स्वरूप परमेश्वर के स्वरूप विज्ञान प्रकाश और नित्य आनन्द में जो रहना है, उसी को कैवल्य मोक्ष कहते हैं।

गाय के दूध की विशेषताएं

❑ गाय का दूध दो घण्टे में हजम होता है, जबकि भैंस के दूध को हजम करने में नौ घण्टे लगते हैं।

❑ गाय का दूध कुपोषण दूर करता है, क्योंकि गाय का दूध सम्पूर्ण आहार है।

❑ गाय का दूध कफनाशक है, भैंस का दूध कफवर्धक है।

❑ गाय का दूध कोलैस्ट्रोल कम करता है, जबकि भैंस का दूध कोलैस्टोल बढ़ाता है।

❑ देसी गाय के कुभ में सूर्य केतु नाड़ी होती है जो सौर ऊर्जा को आकृष्ट करती है। इससे केरेटीन तत्त्व का निर्माण होता है। इसी कारण गाय का दूध पीला होता है। इसे स्वर्ण तत्त्व कहते हैं। इसमें बुद्धि एवं स्मरण शक्तिवर्धक तत्त्व हैं।

❑ गाय के गले के झालर (गल-कम्बल) पर हाथ फेरने से रक्तचाप (बी.पी.) सामान्य हो जाता है।

❑ टी.बी. का रोगी गोशाला में रहकर गोसेवा करे तो उसकी टी.बी. दूर हो सकती है।

❑ गाय के पहले ६ दिन का दूध जिसे देशी भाषा में कीड़ (खीस) कहा जाता है, सामान्य दूध से सौ गुना ज्यादा शक्तिदायक होता है। इसे विदेशों में आज खिलाड़ी (एथलीट) अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उपयोग में ला रहे हैं।

❑ अमरीकी वैज्ञानिकों के अनुसार देसी गाय के दूध में ए-२ तत्त्व होता है जो कैंसर विरोधी है और मस्तिष्क के रोगों को दूर करता है।

❑ पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र) से अनेक रोग दूर होते हैं ऐसा दूध, गोबर, गोमूत्र आदि के रासायनिक विश्लेषण से भी सिद्ध होता है।

साभार—पंजाब केसरी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।